भाषा पर सोशल मीडिया का प्रभाव

सुधामणि एस.

सह-प्राध्यापक सरकारी आर. सी. कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट स्टडीज, रेस कोर्स रोड, बेंगलुरु

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18790951

ABSTRACT:

प्रस्तुत लेख आधुनिक युग में भाषा और समाज पर सोशल मीडिया के बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करता है। डिजिटल क्रांति ने मानवीय संचार को सरल और वैश्विक बना दिया है, जिससे हिंदी जैसी भाषाओं को एक नया अंतरराष्ट्रीय मंच प्राप्त हुआ है। यह अध्ययन शिक्षा, व्यापार और सामाजिक संपर्क में सोशल मीडिया की सकारात्मक भूमिका को रेखांकित करता है, जहाँ इसने भाषाई सीमाओं को कम किया है। दूसरी ओर, यह लेख 'हिंग्लिश' के बढ़ते चलन, व्याकरण की उपेक्षा और औपचारिक लेखन शैली में आ रही गिरावट जैसे नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डालता है। निष्कर्षतः, सोशल मीडिया भाषा के लिए एक दुधारी तलवार है, जिसके संतुलित उपयोग और भाषाई जागरूकता की आवश्यकता है।

KEYWORDS:

सोशल मीडिया, भाषाई परिवर्तन, डिजिटल संचार, हिंदी, सामाजिक प्रभाव.

आधुनिक युग में समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। मनुष्य के जीवन में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा से ही समाज का निर्माण होता है। मानव जीवन के इस डिजिटल युग में सोशल मीडिया एक अविभाज्य हिस्सा बन गया है। भाषा, संस्कृति, सभ्यता तथा शिष्टता का प्रतीक है। भारत जैसे बहुभाषी देश में सोशल मीडिया का प्रभाव, भाषाई परिवर्तन को तेज कर रहा है। सोशल मीडिया ने लोगों के आपसी जुड़ाव, विचारों का आदान-प्रदान, व्यवहार, रहने का ढंग आदि विभिन्न विचारों में नये आयाम प्रदान किए हैं।

आजकल मनुष्य के जीवन में सोशल मीडिया एक अविभाज्य अंग बन गया है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक में यह अपना महत्वपूर्ण हिस्सा निभा रहा है। फेसबुक,

इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, अब केवल मनोरंजन के साधन नहीं बनकर मनुष्य के जीवन में अत्यावश्यक साधन बन गए हैं। इन प्लेटफॉर्मों ने स्थान तथा समय की सीमाओं को तोड़कर, मानव को वैश्विक स्तर पर जोड़ा है जिससे संचार सरल, तेज तथा अत्यावश्यक हो गया है। भारत जैसे बहुभाषीय देश में अधिकतम भाषाओं के अलावा विभिन्न बोलियाँ भी मौजूद हैं। आधुनिक सर्वे के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि सोशल मीडिया आधुनिक मानव के जीवन का एक हिस्सा बन गया है।

भाषा, मनुष्य के बीच विचारों, भावनाओं, सूचनाओं को आदान-प्रदान करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। सामाजिक एकता, संस्कृति का रक्षण, व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की पहचान बनाने में भाषा अपनी अमूल्य भूमिका निभाती है, साथ-साथ समाज के समस्त, सर्वांगीण विकास के लिये भाषा अत्यावश्यक है। भाषा का जन्म सदियों पूर्व हुआ है। भाषा के प्रमुख रूप से दो भेद माने गए हैं:

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा

मनुष्य अपनी विचारधाराओं, भावनाओं का विनिमय करने के लिये तथा अपना दैनंदिन व्यवहार चलाने के लिये मौखिक भाषा का इस्तेमाल करता है। वह शाश्वत नहीं है। लेकिन साहित्य की रचना करने के लिए उपयोग करने वाली भाषा माध्यम है लिखित भाषा। यह शाश्वत है। मौखिक भाषा में मनुष्य को व्याकरण नियमों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन लिखित भाषा में व्याकरण नियमों का पालन करना जरूरी है।

भाषा के महत्व निम्नलिखित प्रकार हैं:

1. संप्रेषण माध्यम: मनुष्य समाजजीवी है। वह अपनी विचारधाराओं तथा भावनाओं को अन्य आदमी के हृदयपटल तक पहुँचाए बिना चैन से नहीं रह सकता। इसलिये उसे भाषा माध्यम की जरूरत है। इसमें वक्ता तथा श्रोता अपनी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
2. शैक्षणिक महत्व: विश्व के विकास और भलाई की दृष्टि से मनुष्य का शिक्षित होना जरूरी है क्योंकि शिक्षा से उसका चिंतन-मंथन, रीति-नीति, तर्क-वितर्क, समाज को समझने का तरीका और व्यवहार ज्ञान बदल जाता है। उसकी संकीर्ण मानसिक स्थिति बदल जाती है। इससे एकता स्थापित होती है। वह अपने ज्ञान का प्रचार तथा प्रसार भी

कर सकता है।

3. नये आविष्कार: शिक्षा से मनुष्य की चिंता करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। इससे वह वैज्ञानिक क्षेत्र या तकनीकी क्षेत्र में आविष्कार करने में आगे बढ़ता है। भाषा के द्वारा ही वह अपनी विचारधाराओं को व्यक्त कर सकता है। कोई भी विषय हो—भाषा विषय, कला विषय, वैज्ञानिक विषय हो या तकनीकी विषय—पढ़ने के लिये भाषा की जरूरत है।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया को हिन्दी में सामाजिक माध्यम कहते हैं। यह इंटरनेट पर बना ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है। यहाँ लोग टेक्स्ट, फोटो, वीडियो द्वारा परिचित होते हैं, वर्चुअल समाज बनाते हैं और एक-दूसरे से जुड़ते हैं। यह संचार, प्रसार, व्यापार तथा मनोरंजन के लिए एक अत्यावश्यक मंच है।

भाषा पर सोशल मीडिया का प्रभाव:

सोशल मीडिया का भाषा पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिससे नए शब्द, छोटे वाक्य और इमोजी का चलन बढ़ा है (जैसे 'हिंग्लिश') और व्याकरण के नियमों में ढील आई है। इससे भाषा सरल व त्वरित हुई है, पर साथ ही यह औपचारिक लेखन को प्रभावित कर रहा है और नई पीढ़ियों को गंभीर साहित्य से दूर कर रहा है। हालांकि इसने हिंदी जैसी भाषाओं को वैश्विक मंच दिया है और संचार को आसान बनाया है, लेकिन इसके कारण गलत सूचना और सतही बातचीत का खतरा भी बढ़ा है।

जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्तियाँ भिन्न-भिन्न माध्यमों के द्वारा होती हैं। प्रत्येक माध्यम का व्याकरण भी भिन्न होता है। सोशल मीडिया एक अपरम्परागत मीडिया है जो एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है। सामाजिक माध्यम या सोशल मीडिया से आशय पारस्परिक संबंध के लिए अंतर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों से है। यह व्यक्तियों और समुदायों को साझा और सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबंध के अलावा उपयोगकर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक मंच बनाने के लिए मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के रूप में भी देखा जा सकता है।

सामाजिक मीडिया या सोशल मीडिया का स्वरूप

सोशल मीडिया के कई रूप हैं जिनमें प्रमुख हैं: इंटरनेट फोरम, वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लॉगिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, फोटोग्राफ, चित्र, चलचित्र आदि। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिए कई संचार प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ:

- फेसबुक – विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय सोशल साइट
- सहयोगी परियोजना (उदाहरण के लिए, विकिपीडिया)
- ब्लॉग और माइक्रोब्लॉग (उदाहरण के लिए, ट्विटर, कू)
- सोशल खबर नेटवर्किंग साइट्स (उदाहरण के लिए डिग और लेकरनेट)
- सामग्री समुदाय (उदाहरण के लिए, यूट्यूब और डेली मोशन)
- सामाजिक नेटवर्किंग साइट (उदाहरण के लिए, फेसबुक)
- आभासी खेल दुनिया (जैसे, वर्ल्ड ऑफ़ वॉरक्राफ्ट)
- आभासी सामाजिक दुनिया (जैसे सेकंड लाइफ)

सोशल मीडिया अन्य पारंपरिक तथा सामाजिक तरीकों से कई प्रकार से एकदम अलग है। इसमें पहुँच, आवृत्ति, प्रयोज्य, ताजगी और स्थायित्व आदि तत्व शामिल हैं। इंटरनेट के प्रयोग से कई प्रकार के प्रभाव होते हैं। दुनिया में दो तरह की सभ्यताओं का दौर शुरू हो चुका है, वर्चुअल और फिजिकल सिविलाइजेशन। आने वाले समय में जल्द ही दुनिया की आबादी से दो-तीन गुना अधिक आबादी अंतर्जाल पर होगी। दरअसल, अंतर्जाल एक ऐसी टेक्नोलॉजी के रूप में हमारे सामने आया है, जो उपयोग के लिए सबको उपलब्ध है और सर्वहिताय है।

व्यापारिक उपयोग

व्यापार क्षेत्र में भाषा तथा सोशल मीडिया का स्थान अमूल्य माना गया है। व्यापार क्षेत्र में विज्ञापन का स्थान प्रमुख माना गया है। विज्ञापन में, सोशल या सामाजिक मीडिया उत्पाद (Product) को जनता तक पहुँचाने की विधा है, तो भाषा उत्पाद के बारे में जानकारी पहुँचाने का माध्यम है। वही प्रोडक्ट के बारे में सोशल मीडिया अपने विभिन्न रूपों से आकर्षक ढंग से पहुँचाता है। लेकिन जनता को उस प्रोडक्ट के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भाषा का सरल तथा

सुमधुर होना जरूरी है।

सोशल मीडिया की समालोचना विभिन्न प्लेटफॉर्म के अनुप्रयोग में आसानी, उनकी क्षमता, उपलब्ध जानकारी की विश्वसनीयता के आधार पर ही हो रही है। मगर कुछ प्लेटफॉर्म्स अपने उपभोक्ताओं को एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म के बीच संवाद करने की सुविधा प्रदान करते हैं, पर कई प्लेटफॉर्म्स अपने उपभोक्ताओं को ऐसी सुविधा प्रदान नहीं करते हैं। वहीं बढ़ती जा रही सामाजिक मीडिया साइट्स के कई सारे नुकसान भी हैं। ये साइट्स ऑनलाइन शोषण का साधन भी बनती जा रही हैं।

सामाजिक मीडिया के व्यापक विस्तार के साथ-साथ इसके कई नकारात्मक पक्ष भी हैं। यह सच नहीं है कि इसे रोका नहीं जा सकता; अगर कोशिश की जाये तो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक व्यवहार करने वाले को पकड़ा जा सकता है और कुछ बुरी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका भी जा सकता है।

सामाजिक संचार-माध्यम, भारतीय भाषाएँ तथा हिन्दी

जब इंटरनेट ने भारत में पांव पसारने शुरू किए तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कंप्यूटर के कारण देश में फिर से अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव बढ़ जाएगा। लेकिन यह धारणा गलत साबित हुई क्योंकि आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉग न केवल धड़ल्ले से चल रहे हैं बल्कि देश के साथ-साथ विदेश के लोग भी इन पर सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा चैटिंग कर रहे हैं। इस प्रकार इंटरनेट भी हिंदी के प्रसार में सहायक होने लगा है।

हिन्दी आज सोशल मीडिया में विविध रूपों से विकसित हो रही है। सोशल मीडिया में हिंदी को वैश्विक मंच मिला है जिससे हिंदी की पताका पूरे विश्व में लहरा रही है। आज फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सअप पर अंग्रेजी में लिखे गये पोस्ट या टिप्पणियों की भीड़ में हिंदी में लिखी गई पोस्ट या टिप्पणियाँ प्रयोगकर्ताओं को ज्यादा आकर्षित करती हैं।

सोशल मीडिया में हिंदी भाषा के प्रभाव का प्रमुख कारण यह है कि हिंदी भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है। संबंधित पोस्ट के भावों को समझने में कठिनाई नहीं होती है। लिखित रूप भी पाठक तक उसी भाव में पहुँचता है, जिस भाव से लिखा जाता है। यह हिंदी भाषा की सुगमता, सरलता और समृद्धता का ही प्रतीक है। हिंदी भाषा के इस सोशल मीडिया ने अपनी ताकत से सरकारों को अपने

फैसलों, नीतियों और व्यवहारों की ओर ध्यान आकर्षित करवाया है। इस मीडिया ने लोक-बोल-सुन रहे हैं, इन मंचों पर सार्वजनिक विमर्श की गुणवत्ता बढ़ी है तथा लोगों का स्तर हिंदी भाषा में बेहतर हुआ है। हिंदी भाषा, यूट्यूब पर भी फल-फूल रही है।

सोशल मीडिया का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज के हर एक क्षेत्र, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यावहारिक पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध संसाधन तथा सामग्री से लोग नई जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। शैक्षिक सामग्री का एक्सेस कर सकते हैं। नेटवर्किंग और कनेक्टिविटी से लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है जिससे व्यक्तिगत नेटवर्किंग आसान हो जाती है। पर्यावरण संरक्षण, मानव अधिकार और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है।

व्यापार क्षेत्र में सोशल मीडिया का उपयोग अपने उत्पादों और सेवाओं को प्रमोट करने, अपने ब्रांड की पहचान बढ़ाने तथा नए ग्राहक पाने के लिए किया जाता है। सोशल मीडिया पर विभिन्न सपोर्ट ग्रुप्स और समुदाय होते हैं जो विशेष समस्याओं तथा चुनौतियों का सामना करने वाले लोगों को भावनात्मक सहारा प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया से कलाकार और लेखक अपने काम को साझा कर सकते हैं, अपने दर्शकों से जुड़ सकते हैं और अपनी कला को एक दर्शक वर्ग तक पहुँचा सकते हैं। आपत्कालीन स्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से त्वरित सूचनाएं मिलती हैं, जिससे लोगों को सही दिशा-निर्देश भी प्राप्त होते हैं।

सोशल मीडिया के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए और उसका उपयोग करने के लिए भाषा की जरूरत है। एक साधारण आदमी को विभिन्न दिशाओं से सशक्त तथा सुदृढ़ करने में भाषा की जरूरत है। आदमी अपनी सुदृढ़ भाषा का उपयोग तथा सोशल मीडिया से अपना जीवन आनंदमय गुजार सकता है। कोई भी आदमी अपनी क्षमता को जितनी अच्छी तरह से प्रदर्शित करेगा उतनी अच्छी तरह से अपनी सफलता सुनिश्चित कर देगा।

सोशल मीडिया ने भाषाई बाधाओं को कम किया है, जिससे खासकर स्वचालित अनुवाद सुविधाओं के कारण विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग जुड़ सकते हैं। YouTube, Instagram जैसे प्लेटफ़ॉर्म भाषा सीखने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए प्रामाणिक सामग्री और समुदाय प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया ने 'हिंग्लिश' और नए मुहावरों

को जन्म दिया है, जो संचार को अधिक मजेदार और प्रासंगिक बनाते हैं। यह लोगों को तुरंत अपनी राय व्यक्त करने और विचारों का आदान-प्रदान करने का मौका देता है।

नकारात्मक प्रभाव

व्याकरण और औपचारिकता में कमी: संक्षिप्तीकरण और शॉर्टकट के उपयोग से पारंपरिक व्याकरण और लेखन शैली कमजोर हुई है। युवा पीढ़ी द्वारा अपनाई गई सोशल मीडिया की भाषा को पुरानी पीढ़ी समझने में संघर्ष करती है, जिससे भाषाई अंतर पैदा होता है। स्वचालित अनुवाद हमेशा सटीक नहीं होते और सांस्कृतिक बारीकियों को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, जिससे गलतफहमियाँ हो सकती हैं। युवा गंभीर साहित्यिक और वैचारिक पठन से दूर हो रहे हैं।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया एक दुधारी तलवार है; यह भाषा को समृद्ध और सुलभ बनाता है, लेकिन साथ ही उसके स्वरूप को बदल भी रहा है। हमें इसके सकारात्मक पहलुओं का लाभ उठाते हुए इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने और भाषा के संतुलन को बनाए रखने के लिए जागरूक रहने की आवश्यकता है। हर एक आदमी, सोशल मीडिया का उपयोग करने के साथ अध्ययन करने द्वारा परिपक्व बन जाता है। लिखित तथा मौखिक भाषा का स्वरूप भी जडभूत होकर रहता है।

References:

1. 17.252.14.250:8080/jspui/bitstream/123456789/2117/1/2-सोशल%20मीडिया%20पर%20हिन्दी%20भाषा%20का%20प्रयोग%20एवं%20महत्व.pdf
2. https://zenodo.org/records/18152915
3. https://newresearchjournal.com/assets/archives/2023/vol8issue2/8061-1699360969930.pdf